

केरल में महापाषाणकालीन स्थल

स्रोत: द हट्टि

चर्चा में क्यों?

हाल ही में केरल में [वर्षा जल संचयन परियोजना के](#) परणामस्वरूप बड़ी संख्या में [महापाषाणकालीन कलशों](#) की खोज हुई।

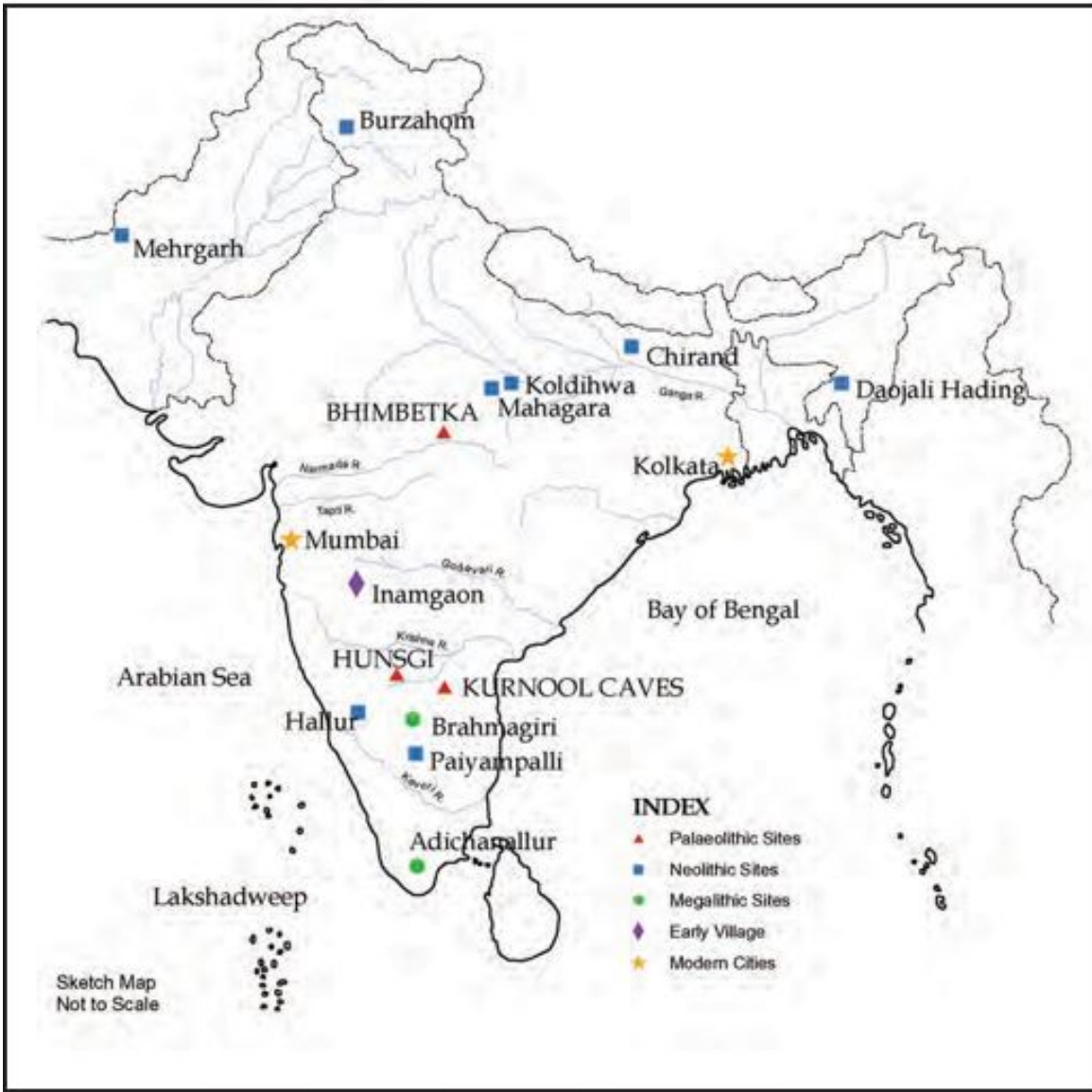
- यह खोज नेनमारा वन प्रभाग में कुंडलकिक्कड पहाड़ी (जसि मालमपल्ला या मलपपुरम पहाड़ी के नाम से भी जाना जाता है) पर हुई।
- कलश दफन में मृत व्यक्तियों के अवशेषों को [मृद्भांड या कलश](#) में रखकर दफना दिया जाता था।

महापाषाणकालीन कलशों के दफन स्थल की खोज से संबंधित प्रमुख तथ्य क्या हैं?

- पारंपरिक कलश अंत्येष्टि: पहाड़ी के शीर्ष पर स्थित अंत्येष्टि स्थलों में कब्रों के ढेर, कब्रगाह, तथा पाषाणयुक्त अंत्येष्टि स्थल पाए गए हैं।
 - 2,500 वर्ष से भी अधिक प्राचीन इन कलशों की उपस्थिति, पहाड़ी स्थल के लिये दुर्लभ है।
- कलश की विशेषताएँ: इस क्षेत्र में विभिन्न प्रकार के मृद्भांडों के टुकड़े पाए गए, जिनमें काले मृद्भांड, लाल मृद्भांड तथा काले और लाल मृद्भांड शामिल हैं।
 - हालाँकि एक उल्लेखनीय खोज में उंगलियों के निशान वाला एक कलश, तथा लघु मृद्भांड शामिल हैं जिन पर डोरी के निशान बने हुए हैं, जो मृद्भांडों में प्रयुक्त विशिष्ट सजावटी तकनीकों का संकेत देते हैं।
 - पहाड़ी के शीर्ष पर छेनी के निशान पाए गए, जिनसे यह संकेत मिलता है कि गोलाकार पत्थरों को छेनी का उपयोग करके बनाया गया था।
 - इससे इस क्षेत्र में दफन स्थल के निर्माण के लिये अधिक संगठित दृष्टिकोण का पता चलता है।
- खोज का महत्त्व: यह खोज मध्यपाषाण काल (इस स्थल पर सूक्ष्मपाषाण काल की उपस्थिति के कारण) और केरल में लौह युग के बीच संबंधों के बारे में महत्त्वपूर्ण जानकारी प्रदान करती है।
 - पुरातत्वविदों के अनुसार, [मध्यपाषाण](#) और [लौह युग](#) के अवशेषों का ऐसा संयोजन असामान्य है।

महापाषाणकालीन संस्कृति क्या है?

- महापाषाण का परिचय: महापाषाण से तात्पर्य बड़े पत्थरों से बने [समारकों](#) से है। अधिकतर मामलों में महापाषाण निवास क्षेत्रों से दूर स्थित दफन स्थल हैं।
- महापाषाण का कालक्रम: ब्रह्मगिरी उत्खनन के आधार पर दक्षिण भारत में महापाषाणकालीन संस्कृतियों का कालतीसरी शताब्दी ईसा पूर्व और पहली शताब्दी ईस्वी के बीच माना जाता है।
- भारत में महापाषाण का भौगोलिक वितरण: महापाषाणकालीन संस्कृतिका मुख्य संकेंद्रण दक्कन में है, विशेष रूप से [गोदावरी नदी](#) के दक्षिण में।
 - हालाँकि इसके अवशेष पंजाब के मैदानी भाग, सधु-गंगा बेसिन, राजस्थान, गुजरात और जम्मू एवं कश्मीर के [बुरज़होम](#) में भी पाए गए हैं।
 - इसके महत्त्वपूर्ण स्थलों में [सरायकला \(बिहार\)](#), [खेडा \(उत्तर प्रदेश\)](#), [देवसा \(राजस्थान\)](#) आदि शामिल हैं।
- दक्षिण भारत में लौह का उपयोग: दक्षिण भारत में महापाषाण काल एक पूर्ण लौह कालीन संस्कृति थी, जहाँ लौह प्रौद्योगिकी के लाभों को पूर्ण रूप से उपयोग किया गया था।
 - [वदिरभ के जूनापानी](#) से लेकर तमलिनाडु के [आदचिनललूर](#) तक लौह वस्तुएँ जैसे शस्त्रों और कृषि उपकरण पाए गए।
- नरिवाह पद्धति: वे कृषि, शिकार, मत्स्याग्रह और पशुपालन के संयोजन पर जीवन यापन करते थे।
- शैल चित्र: महापाषाण स्थलों पर पाए गए [शैल चित्रों में](#) शिकार, पशु आक्रमण और सामूहिक नृत्य के दृश्य दर्शाए गए हैं।



MAP: Some Important Archaeological Sites

नोट:

- मध्य पाषाणकाल लगभग 12,000 वर्ष पूर्व से आरंभ होकर लगभग 10,000 वर्ष पूर्व तक चला । इस काल में पाए जाने वाले पत्थर के औज़ार आमतौर पर छोटे होते हैं, इन्हें माइक्रोलिथि अथवा लघुपाषाण कहा जाता है ।
- लघुपाषाण को संभवतः हड्डी या काष्ठ हैंडल पर आरी और दरांती जैसे उपकरण बनाए जाते थे ।